मिथिला पेंटिंग

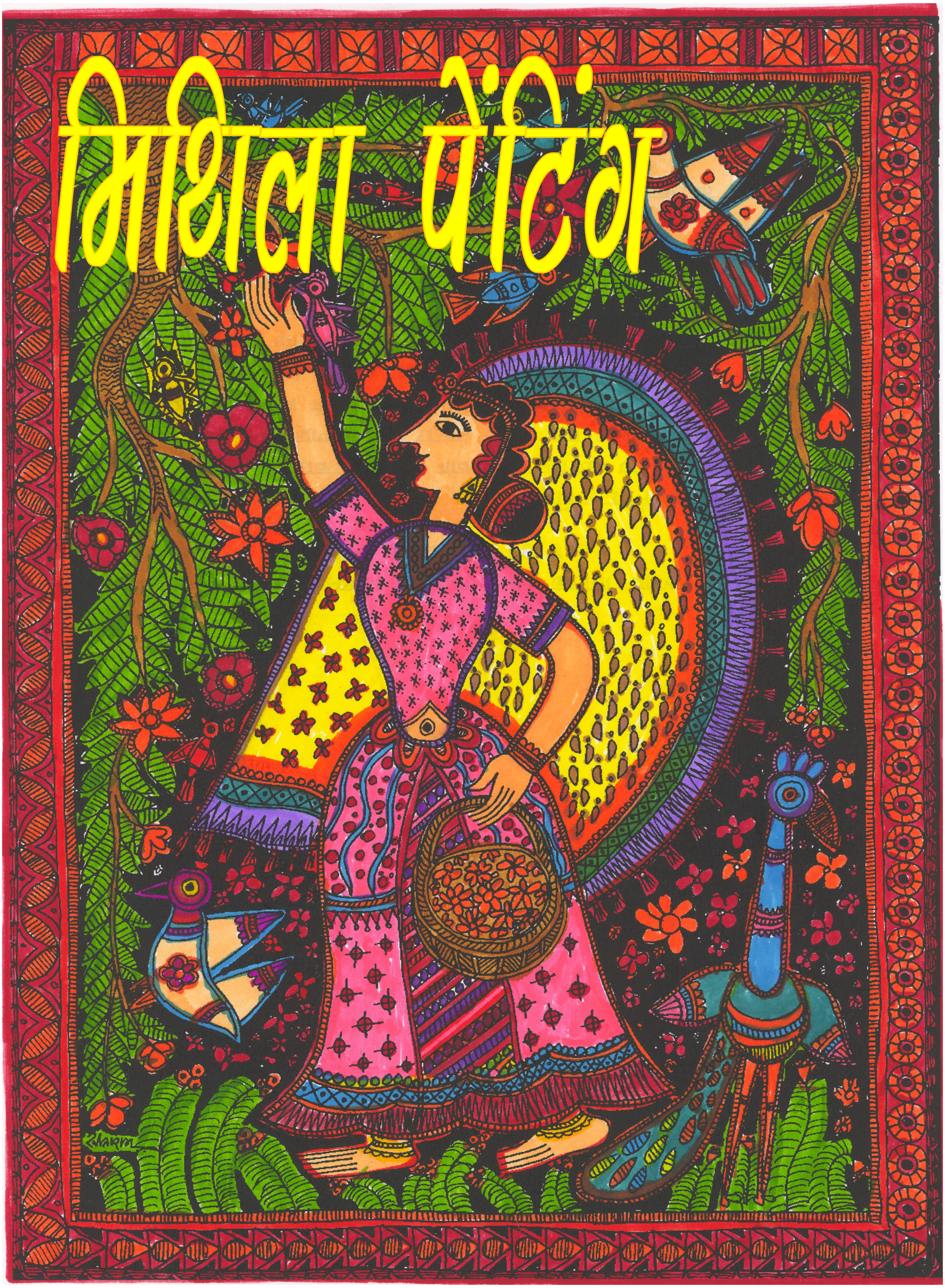

आइए, मिथिला पेंटिंग सीखते हैं ।

मिथिला बिहार राज्य के एक छोटे से क्षेत्र (अंचल) का नाम है जिसमें कई जिले आते हैं। मिथिला पेंटिंग खासकर मधुबनी जिले की लोकश. ली है। इस जिले में बहुत पुराने समय से पर्व-त्यौहार, शादी विवाह के अवसर पर घरों की दीवारों पर रेखाओं और सुन्दर रंगों से चित्राकृतियां बनाई जाती थीं जिन्हें हम मधुबनी पेंटिंग के नाम से जानते हैं। इस शैली के सारे चित्र सपाट एवं मनमोहक रंगों से भरे रहते हैं और चित्र की विषयवस्तुओं में देवी-देवताओं की कथाएं, पर्व-त्योहार, विवाह-मधुश्रावणी के अवसर पर भावांकित होने वाले सुंदर स्थान की प्रमुखता होती है।

पेड़ पौधों, पशु पक्षियों, देवी-देवताओं, घर-द्वार एवं वातवरण की मिठास आदि स्वभावत: ही इस चित्रशैली की पहचान हैं जो बहुत ही सघनता और आत्मीयता से किनारी के अन्दर उकेरी जाती है। समय की गति के साथ-साथ यह चित्रशैली दीवारों से निकलकर कागज, कपड़े तथा दूसरे कैनवासों पर भी बनने लगी। वर्तमान समय में मिथिला चित्रशैली को दुनिया के कई देशों में लोग पसंद करते हैं। आज इसका उपयोग घरों को सजाने से लेकर पोशाकों पर भी किया जाता है। इन चित्रों में भरे जाने वाले रंगों की खासियत है कि इनके सभी रंग प्रकृति के सहज स्रोतों से गृह उद्योगों में बनाये जाते थे। अब कई कम्पनियों ने इन रंगों को बाजार में उपलब्ध करवा दिया है।

प्रकृति के सहज स्रोत (रंगों के लिए)

पीला-हल्दी से

सफेद- अरबा चावल से

काला- कालिख से

लाल - सिंदूर/ गेरू मिटटी से

नारंगी- हरसिंगार के फूलों से

भूरा- गोबर, हर्र, करोली, पेड़ की छालों से

नीला- नील के बीजों से

हरा- पेड़ पौधों की पत्तियों से।

तो आइए, इसे सहजता से बनाने के लिए पहले कलम से कागजों पर कुछ किनारी बनाना सीखें —

- किनारी के चिह्न

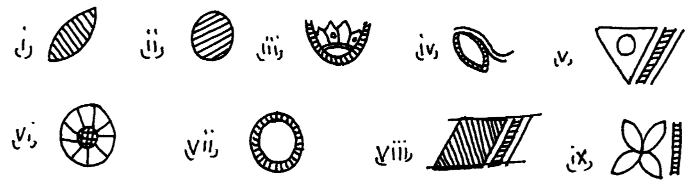

- इन चिह्नों के अभ्यास करने के बाद दो समानान्तर रेखाओं के बीच में क्रम से बनायें तथा अधूरे किनारी को पूरा करें -

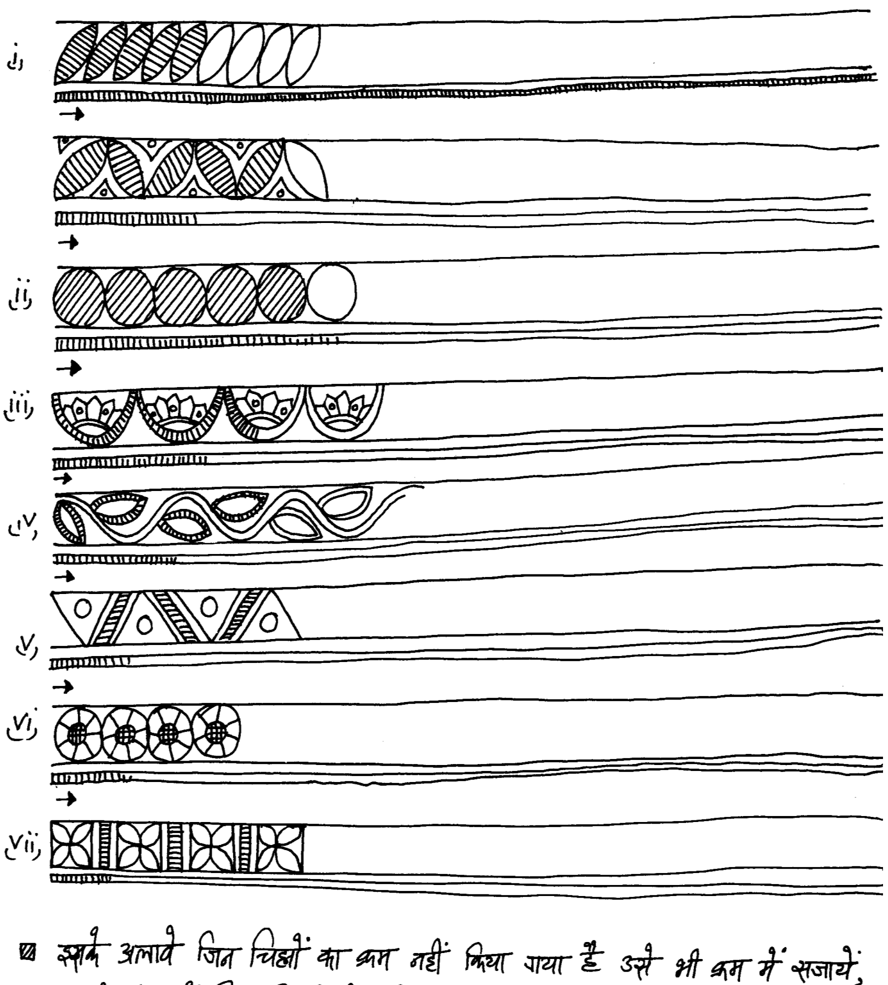

- इसके अलावे जिन चिह्नों का क्रम नहीं किया गया है उसे भी क्रम में सजायें, अगले अंक में फिर मिलते हैं और पशु-पक्षी, पेड़-पौधों के बारे में बात करते हैं।

पिछले अंक में आपने कई तरह के किनारी बनाना सीखा।
और उसका अभ्यास कर रहे होंगे अभ्यास से चीजों को समझने में आसानी होती है। खैर! अब आप मेरे साथ कलम और कागज लेकर बैठ जाइए, और मिथिला शैली में पेड़-पौधे/चिड़िया बनाइए।

◆ पेड़-पौधों को बनाने के लिए पहले कुछ फूल-पत्तियों का अभ्यास करते हैं -

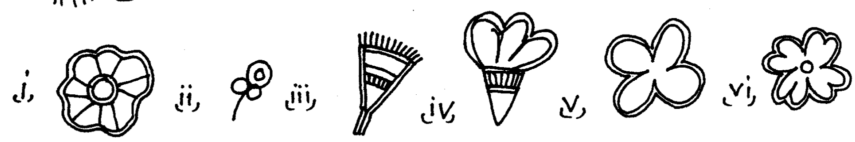

ये सभी फूलों के आकार हुए, जो पेड़-पौधों के अंतिम शिरा पर उकेरना है।

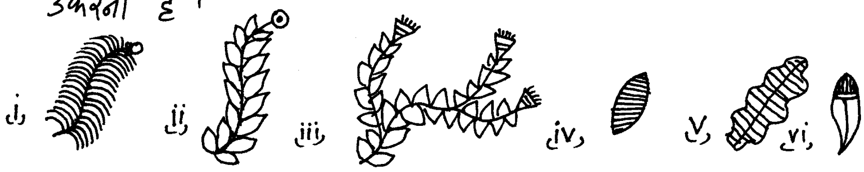

ये सभी झाड़ी और पत्तियों के आकार हुए जिसे सही स्थान और डालों पर क्रम से उकेरेंगे।
जैसे-

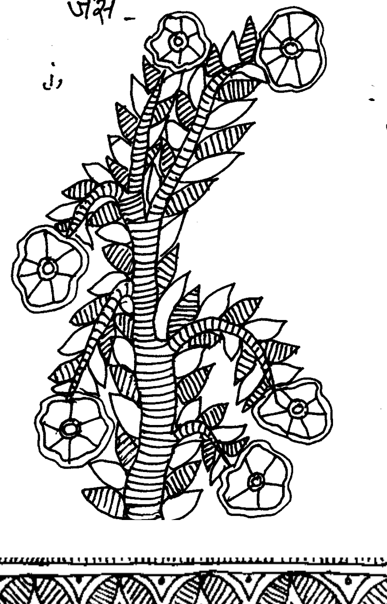

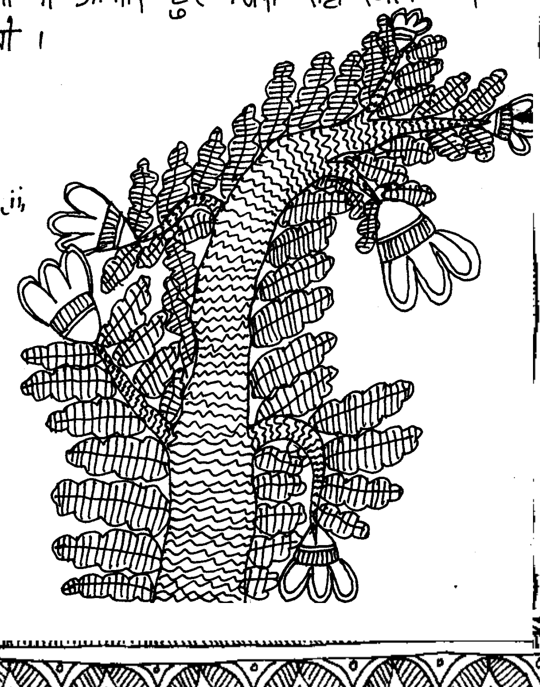

पेड़ बनाने में सबसे पहले तना और डाल का आउट लाइन खींचें फिर उसमें पत्तियां और फूल लगाएं। उसके बाद पत्तियों और तना के बीच स्ट्रॉक खींचें।

स्ट्रॉक के कुछ नमूना - (पहले गोल/चौकोर कई बॉक्स बना लें)

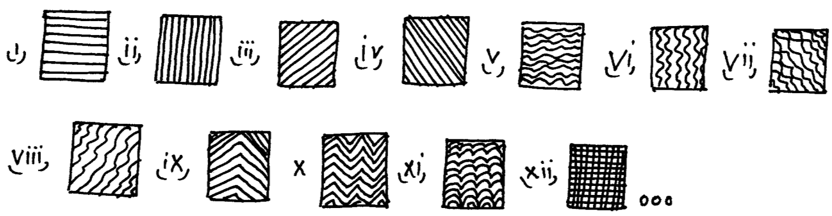

इस तरह स्ट्रॉक भरने का अभ्यास करें तो और भी नया स्ट्रॉक निकल आएगा।

◆ चिड़िया -

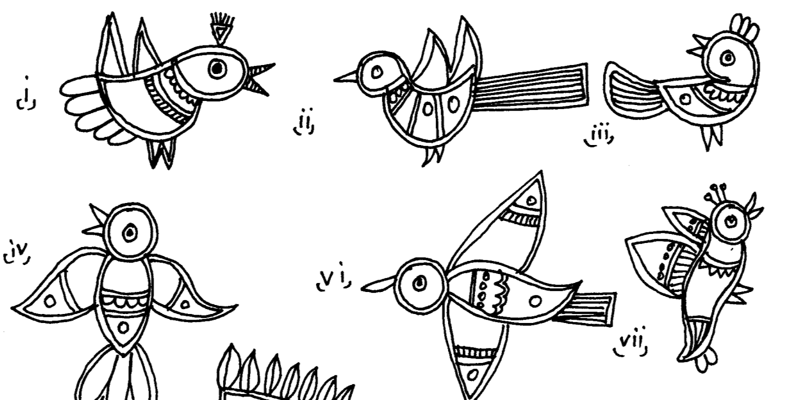

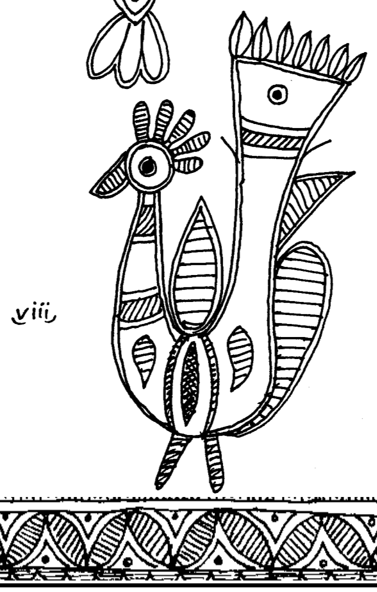

इसके अभ्यास के लिए बारी-बारी से चिड़िया और पंख बनाएं और स्ट्रॉक या चटख रंग भर दें।

फिर अगले अंक में मिलते हैं और पशु-पक्षियों के बारे में बात करते हैं।

आपने पिछले अंक में कुछ पशु- पक्षियों का चित्र बनाना सीखा आइए अब हम परिवेश के आधार पर चित्र बनाते हैं वह परिवेश हमारे आस-पास के हों तो बहुत मजा आएगा। वैसे हमलोग पिछले कई अंकों में परिवेश में दिखने वाले अलग-अलग चीजों का चित्र बनाया है। उसे सहेज कर एक ही चित्र (कागज पर) बनाएं तो एक अच्छा परिवेश का चित्र बन पायेगा। जिसमें घर होगा, पेड़-पौधे होंगे, फूल, चिड़िया, पानी, मछली सब होंगी साथ में आदमी भी!

अब तक हमलोगों ने
i, घर ii, पानी iii, आदमी का चित्र नहीं बनाए हैं!
कोई बात नहीं, अभी बना लेते हैं!

i, घर का चित्र -

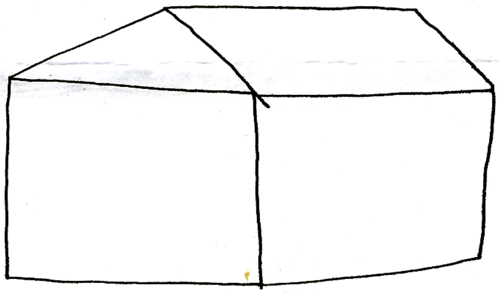

घर बनाने के लिए पहले एक रेखा से इस तरह की आकृति बनाएंगे

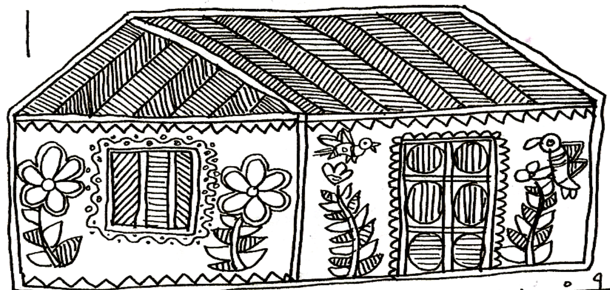

फिर उस रेखाओं के समानान्तर दूसरी रेखा खींचेंगे फिर उसके अंदर खिड़की, दरवाजा बनाएंगे फिर घर के ऊपर छप्पड़ (खपड़ा) स्वेस्टस) आदि बनाकर स्ट्रोक भरेंगे और एक सुन्दर घर बनाने के लिए उसे "सजा देंगे" (सजावट)।

(ii) पानी का चित्र -

[क] वर्तन में

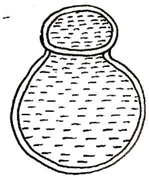

[ख]

पानी बनाने से पहले वर्तन का चित्र बना लें वर्तन में और भी चित्र बना सकते हैं - ग्लास, लोटा आदि ।

[ग] तालाब या नदी में -

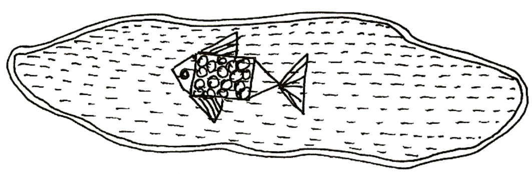

तालाब या नदी बनाने के लिए पहले उसकी आकृति बना लें फिर

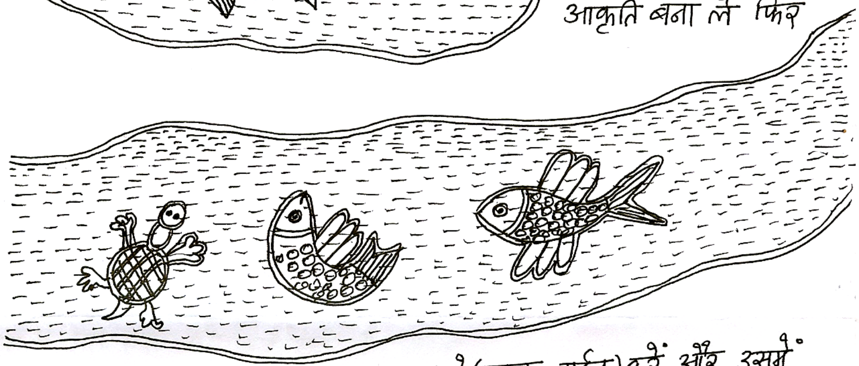

उसे (डबल लाईन) करें और उसमें पानी भरें तथा पानी में मछली कछुआ बनाएं ।

(iii) आदमी का चित्र -

[क] बच्चे

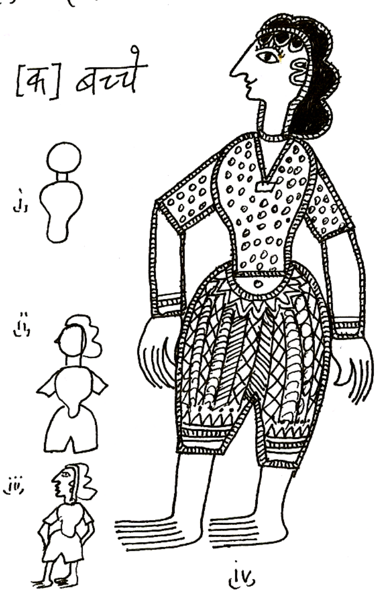

[ख] औरत

पिछले अंक में आपने कई तरह के फूल, पत्तियां, झाड़ी, पेड़ पौधे और चिड़िया बनाना सीखा। सीखने के क्रम में जो चित्र एक बार में नहीं बने तो, निराश नहीं होना चाहिए बल्कि उसे बार-बार अभ्यास करना चाहिए। चित्र बनेगा ही।

आइये इसबार हमलोग कुछ पशु-पक्षी ही बनाते हैं:-

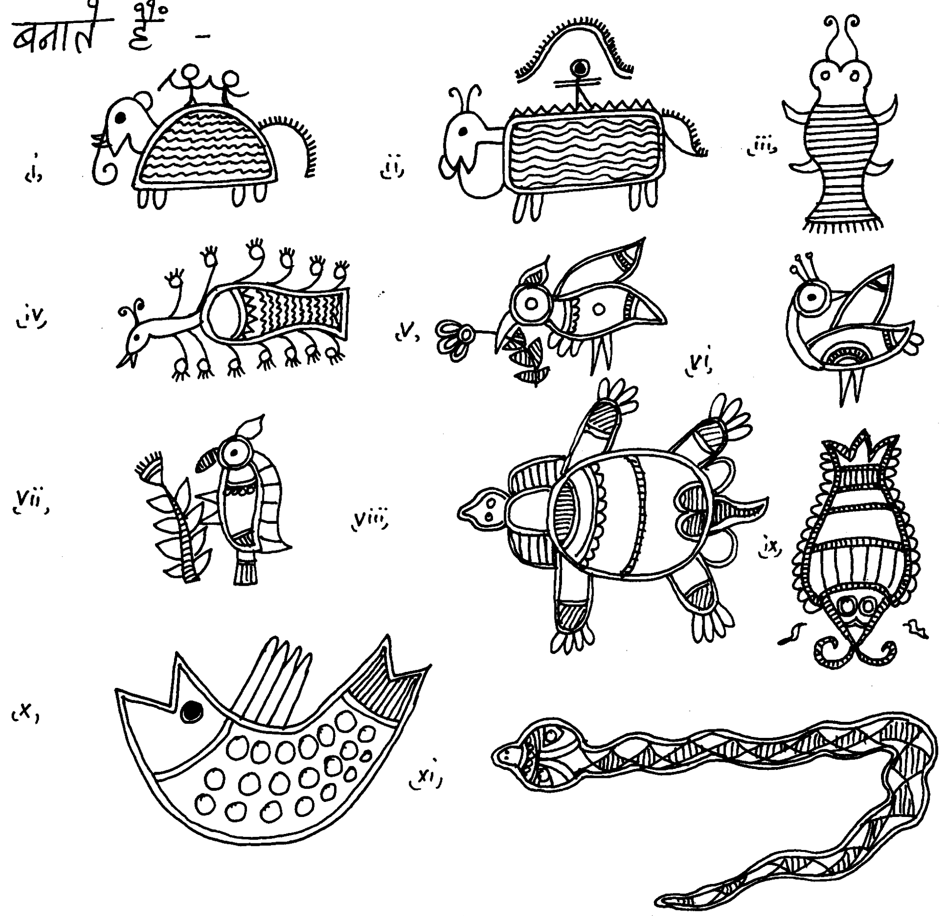

ये सभी चित्रों को बनाते समय, प्रथम चरण में आऊट लाईन खींचें फिर उसके समानान्तर रेखाएं खींचें और स्ट्रोक / रंग भर दें। अभ्यास करें इससे बड़े चित्र बनाने का।

इन सभी चित्रों को चाहें तो पुरा पेज में एक ही बनाएं और इसके आस-पास बाकी जगहों पर पेड़ झाड़ी बनाएं और चारों तरफ किनारी बना दें। अगले अंक में फिर मिलते हैं तब बात करेंगी अपने परिवेश पर।

सीताराम

पिछले अंक में आपने अपने परिवेश पर आधारित मिथिला शैली में चित्र बनाना सीखा। आपने देखा/सीखा होगा कि इन चित्रों में बनाये गये पशु-पक्षियों, मानवाकृतियों और घर आदि में बाहर की रेखाएं दोहरी होती हैं तथा इनके भीतरी भाग में फूल-पत्तियां और महीन रेखाओं से भर दिये जाते हैं।

इस शैली के चित्रों में महिला के लिए लहंगा-चुनरी तथा पुरुष के लिए धोती-कमीज प्रधान होता है। चित्रों में भाव-भंगिमा आंगिक (अंग संचालन) पर निर्भर करता है।

आइये हम लोग बनाये गये चित्रों में कपड़ों के उपर प्रिंट के लिए कुछ चिह्न तथा किनारी का अभ्यास करते हैं।

1. अभ्यास के लिए पहले कई चौकोर/गोल खाना बना लें तथा उसके भीतर अलग-अलग चिह्नों को भरें।

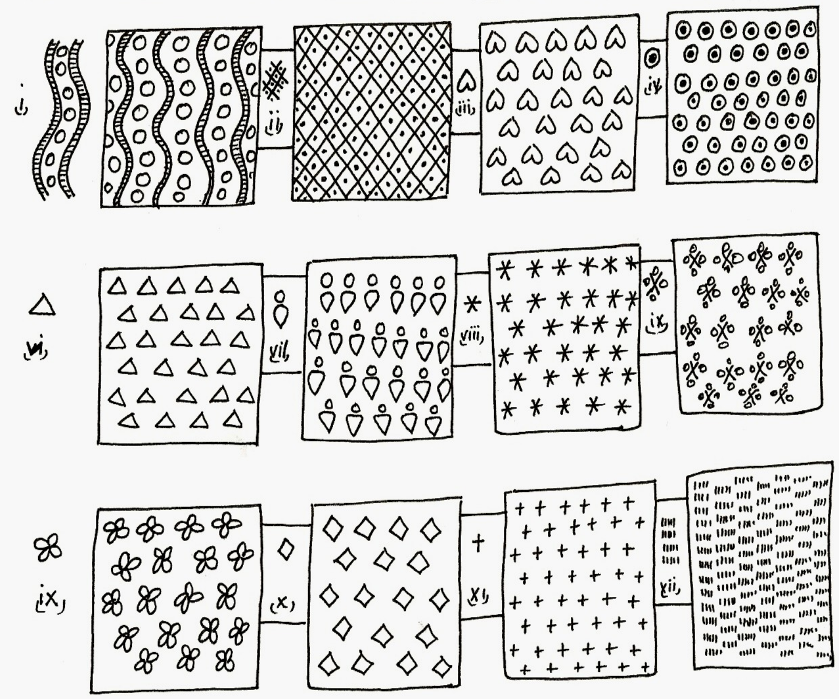

२. कपड़ों में किनारी के लिए

i 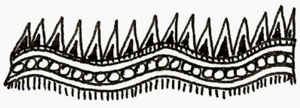

ii 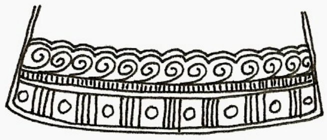

iii 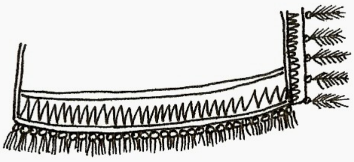

iv 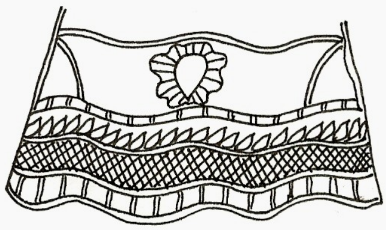

v 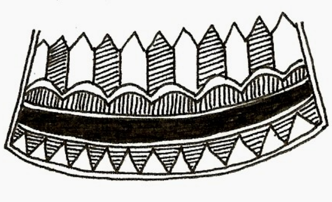

vi 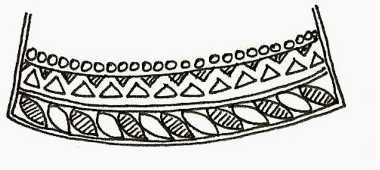

इसे पूरा करें

मिथिला शैली के मोहक पेंटिंग से हम अपने घर की सजावट तो कर ही सकते हैं, साथ ही हम अपने पहनने के कुर्ते, सलवार, साड़ी, पर्दा आदि पर भी फूल-पत्तियाँ, चिड़िया, हाथी, लड़की आदि का चित्रण कर कपड़े को और भी खूबसूरत बना सकते हैं।

पहनने के कपड़ों पर चित्र बनाने के लिए '0' नं. का गोल ब्रश और फैबरिक कलर (कपड़ों वाला रंग) की आवश्यकता होगी।

आइये इन नमूनों का अभ्यास करते हैं –

i) 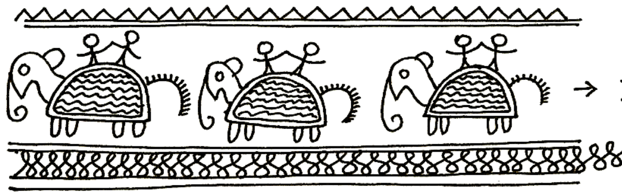 → इसे और आगे बढ़ाएं।

ii) 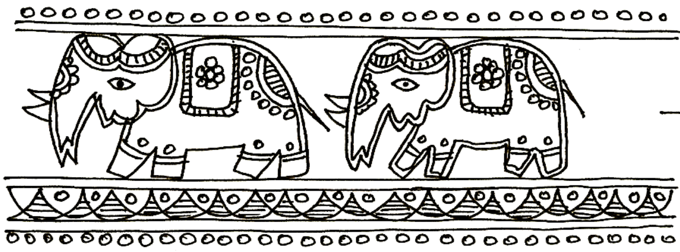 → ,,

iii) 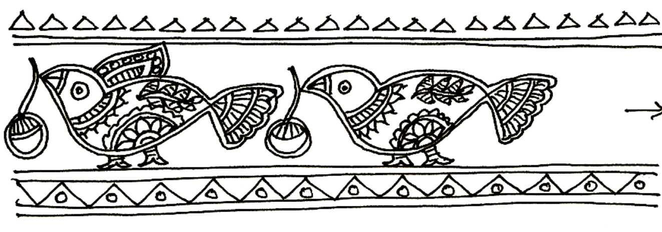 → ,,

(iv)

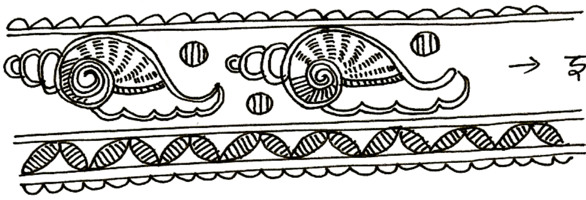

→ इसे आगे बढ़ाएं ।

आगे और बढ़ाएं ।
↑

(v)

(कुर्ते के लिए)

(vi)

किनारियों में मन पसंद पैटर्न (i, ii, iii, iv, vi डालें)

इस तरह कुर्ते में अलग-अलग पैटर्न तथा डिजाईन का अभ्यास करें ।

साड़ी के लिए भी मन पसंद पैटर्न तथा डिजाईन करें ।

आँचल (मुताबिक) (किनारी दो से ढाई इंच में)

अब तक आपने ढेर सारे चित्र बनाना सीख लिया होगा पर एक संपूर्ण चित्र में वातावरण तथा उपयोगी वस्तुओं को चित्रित करना जरूरी है जिससे चित्रों का भाव स्पष्ट हो सके। जैसे घर-आंगन में काम करते हुए महिला-पुरुष। घर के बाहर खेलते बच्चों का चित्र बनाना हो तब हमें घर में इस्तेमाल होने वाले उपयोगी वस्तुओं तथा घर के आस-पास के वातावरण को भी इन चित्रों में उकेरेंगे तो चित्र और भी प्रभावी होगा। यदि हम किसी कहानी/कविता के आधार पर चित्र बना रहे होते हैं तो उपरोक्त बातों पर ध्यान आवश्यक हो जाता है।

वैसे कथाओं के आधार पर चित्रों की कई शृंखला बनाए गए हैं जैसे रामायण, महाभारत, कृष्ण लीला, शिव, गणेश, हनुमान, बुद्ध आदि। पर अभी भी हजारों दंत कथाएँ हैं जिसके आधार पर आप खुद चित्रों की एक शृंखला बना सकते हैं।

आइये इसके लिए पहले कुछ उपयोगी वस्तुओं के चित्र का अभ्यास करते हैं -

फूल

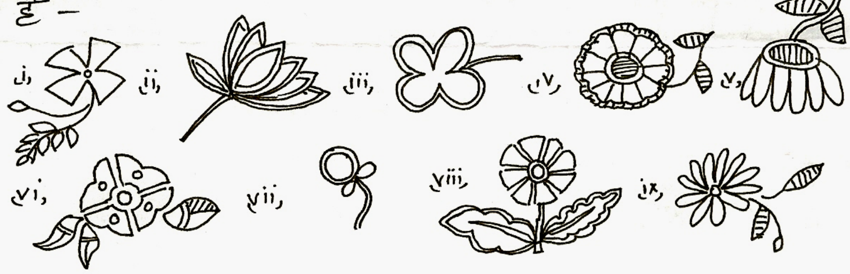

बर्तन व अन्य वस्तुएं

(vi)

सूर्य

(vii)

चन्द्रमा

(xi)

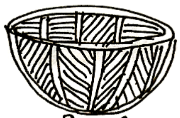

टोकरी

(viii)

नवग्रह

(ix)

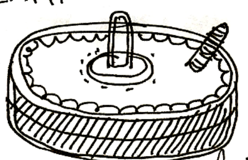

जाता (चक्की)

(x)

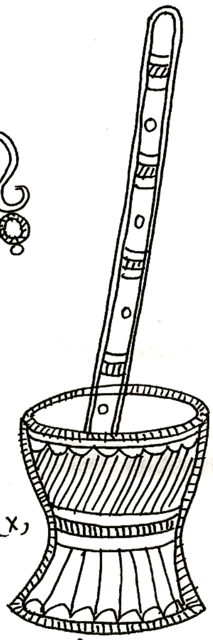

ओखल

(xii)

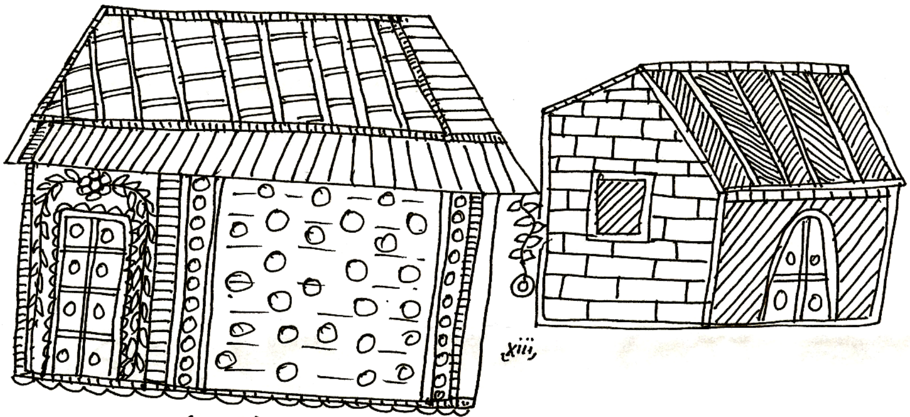

(xiii)

(घर)

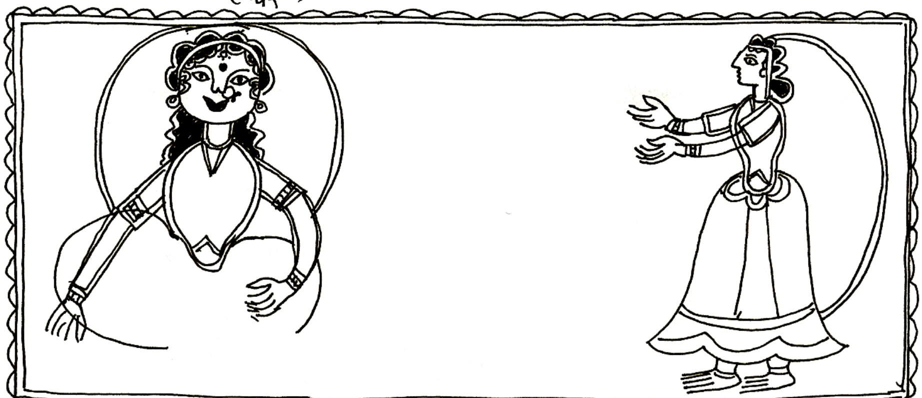

इस चित्र को पूरा करें (पहला चित्र में हो सकता है जाता (चक्की), टोकरी लगी) पर दूसरे चित्र में आप खुद लगाएं। फिर अगले अंक में मिलते हैं।)

अब तक आपने चित्रों के लिए स्ट्रॉक (लाईन) का उपयोग सीख चुके होंगे। अब हम भरनी करना सीखेंगे यानि चित्रों को रंगों से भरना ।

इसके लिए जरूरी सामान

कागज, कपड़ा या बोर्ड जिस पर आप चित्र बनाना चाहते हैं।

रंग भरने के लिए '1' या '2' नम्बर का गोल ब्रश।

लाईन खींचने के लिए होल्डर और कलम की नींव।

फैब्रिक रंग-काला, उजला, लाल, पीला और नीला।

आइये अब जानते हैं कौन से रंग किन-किन भावों को बताते हैं।

क्रोध - लाल रंग से

गेरा रंग - पीला रंग से

श्याम रंग - नीला रंग से

जल के लिए - नारंगी रंग से

खुशी के लिए - हरे रंग से

रंगों को टिकाउ बनाने के लिए रंगों में बकरी अथवा गाय का दूध और गोंद अलग बर्तन में मिलाएं। प्रारंभिक तीनों रंगों में किसी दो रंगों को आपस में मिलाने से तीसरा रंग बन जाएगा।

जैसे - पीला + नीला - हरा

पीला + लाल - नारंगी

लाल + नीला - बैगनी

हरा + लाल - भूरा

लाल + काला - चॉकलेट आदि ।

आपस में मिलने वाले रंगों की मात्रा कम/ज्यादा रहने पर तीसरे रंग का प्रभाव गहरा/हल्का होगा।

जैसे- 3 भाग पीला + एक भाग नीला - सुगापंखी।
पहले चरण में ही आपने प्राकृतिक रंगों के बारे में जाना पर उसे बनाने में काफी मेहनत पड़ती है। कृत्रिम रंग (फैब्रिक रंग) आसानी से बाजार 10/12 रुपये में मिल जाते हैं जिसके एक शीशी से पूरी साड़ी पेंटिंग की जा सकती है।
कपड़ों के रंगों की पेंटिंग को 72 घंटे यानि तीन दिनों तक सूखने देना चाहिए नहीं तो चित्र बिगड़ जाएंगे। सूख जाने के बाद उलटी तरफ से इस्त्री करना चाहिए। पहनने के कपड़ों के अलावे पॉटरी अथवा घरों को सजाने के साथ ही इस कला को रोजगार के रूप में भी अपनाया जा सकता है।

सीताराम